दो जनों की अमरीकी सेना

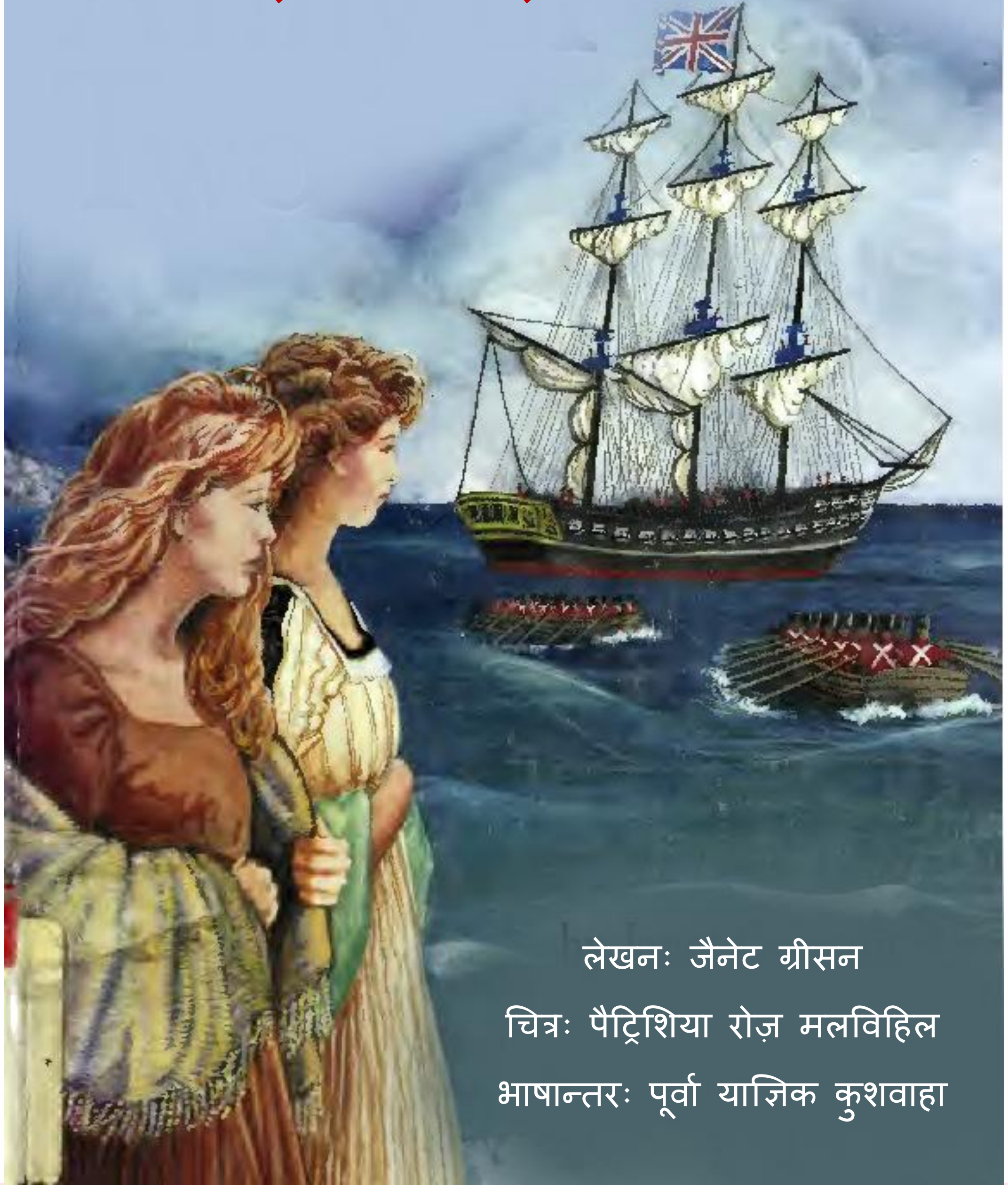

लेखनः जैनेट ग्रीसन
चित्रः पैट्रिशिया रोज़ मलविहिल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

दो जनों की अमरीकी सेना

लेखनः जैनेट ग्रीसन

चित्रः पैट्रिशिया रोज़ मलविहिल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पीटर ल्यूसिल के लिए

मैं सिच्युएट के एक छोटी लाल इमारत में स्थित सिच्युएट हिस्टॉरिकल सोसायटी का शुक्रिया अदा करना चाहूँगी, जिसने इस परियोजना के लिए शोध में विस्तृत मदद की। *एन अमेरिकन आर्मी ऑफ टू* एक ऐतिहासिक घटना का काल्पनिक पुनर्कथन है। सो, सिच्युएट हिस्टॉरिकल सोसायटी इस रचना का या इस जैसी किसी दूसरी रचना की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं कर सकती। पर मैं सोसायटी से मशवरा कर सकी, उन्होंने मुझे प्राथमिक स्त्रोत सामग्री उपलब्ध करवाई। मैं उनकी शुक्रगुज़ार हूँ। फोर्ट स्नैलिंग स्थित मिनेसोटा हिस्टॉरिकल सोसायटी के थॉमस शॉ, फेयटविल, आर्केनसॉ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चैलॉन रैगस्डेल तथा बॉस्टन के मेरे रिश्तेदार - जो, जैनी व जो ली का विशेष आभार।

-जे.जे.

टली परिवार को उनके धैर्य, खुशमिज़ाजी, और गर्म चाय के लिए शुक्रिया।

-पी. आर. एम.

लेखिका की कलम से

1812 के युद्ध का इतिहास बहादुर अमरीकी सैनिकों की कहानियों से अटा पड़ा है। फिर भी ऐसे सैनिक कम ही होंगे जिन्होंने इतनी बहादुरी से देश की सेवा की होगी, जितनी दो बेटस् बहनों, रिबैका और एबिगेल ने की।

रिबैका बेटस् का जन्म 1793 में हुआ था। इसी वर्ष फ्रांस व ग्रेट ब्रिटेन में जंग छिड़ी। संयुक्त राज्य अमरीका ने इस जंग में शामिल होने की कोशिश की, पर ग्रेट ब्रिटेन ने अमरीकी नाविकों को अगुआ करना शुरु किया और अमरीका को युरोप से व्यापार करने से रोका। सो, जून 1812 में अमरीकी राष्ट्रपति मैडिसन ने कांग्रेस से कहा कि इंग्लैंड से युद्ध का ऐलान किया जाए।

यह युद्ध तीन वर्षों तक चला। अधिकतर मुठभेड़ें अमरीका के बड़े तालाबों, पूर्वी अटलांटिक सागर के तटों, या प्रमुख नदियों के तटों पर हुईं। ब्रितानी सैनिक जहाज़ों से या कनाडा के ब्रितानी इलाकों के किलों से आते थे।

न्यू इंग्लैंड के निवासियों पर युद्ध का गहरा असर पड़ा। उन्हें ज़रूरी चीजों की आपूर्ति में दिक्कतें होने लगीं, उन्हें ब्रितानी हमले का डर लगातार सताता था। उनकी रक्षा करने वाले अमरीकी सैनिक अमूमन अल्पकालिक स्वयंसेवक थे, जो राज्य की सेना के सदस्यों के रूप में लड़ते थे। वे होम गार्डस् (गृह रक्षक) थे।

बाँसुरी वादक और ढोलची इन सैनिक टुकड़ियों और स्थाई अमरीकी सेना के महत्वपूर्ण सदस्य थे। युद्ध के दौरान गोलाबारी के धुएं और शोर के चलते कप्तानों का दिया हुक्म सुनाई नहीं देता था, सो बाँसुरी वादक और ढोलची उन गानों की धुने बजाते जिससे सैनिकों को कप्तान के आदेश का पता चल जाता था - आगे कूच करो! हमला करो! जागो! पीछे हटो! इन संगीतकारों का काम कठिन और ख़तरनाक होता था। कई बार तो उनके ही साथी सैनिक, हुक्म देने के करण उन्हें नापसन्द करते थे। साथ ही दुश्मन उन्हें हुक्म पहुँचाने से रोकने के मकसद से उन पर निशाना भी साधते थे।

रिबैका और एबिगेल ने 1812 के युद्ध में बाँसुरी और ढोल का इस्तेमाल कर एक छोटी भूमिका अदा की। उन्होंने यह कब और कैसे किया, इसको लेकर कई अलग-अलग कहानियाँ हैं। *एन अमेरिकन आर्मी ऑफ टू* में मैंने रिबैका की कहानी व तथ्यों को उस प्रकार पेश किया है जैसे वे मुझे एकाधिक आरंभिक स्त्रोतों में मिले। ये स्त्रोत बताते हैं कि ब्रितानी सेना ने मैसाच्युसेटस् के सिच्युएट इलाके में दो कामयाब हमले किए थे। उनमें एक 11 जून व दूसरा 7 जुलाई, 1814 में हुआ था। माना यह जाता है कि इस कहानी की घटनाएं 1814 की गर्मियों में घटी थीं। उस वक़्त रिबैका की आयु 20 वर्ष की और एबिगेल महज 16 वर्ष की थी।

सिच्युएट का प्रकाशस्तंभ आज भी खड़ा आगंतुकों का स्वागत करता है। रिबैका व एबिगेल की कब्रें आपको सिच्युएट के यूनियन कब्रगाह में मिलेंगी।

1814 की एक साफ़ सुबह थी।
जुलाई की तेज़ धूप ऊँचे
प्रकाशस्तंभ की खिड़कियों पर चमक रही थी।

रिबैका प्रकाशस्तंभ के चिरागों
को साफ कर चमका रही थी।
रिबैका की छोटी बहन एबिगेल
बातियों को काट-छांट रही थी।
उनके पिता ने चिरागों में तेल भरा।
एबिगेल ने समुद्र की ओर नज़र डाली।
सूरज की रोशनी से पानी झिलमिला रहा था।

''मुझे दो छोटे बिन्दु दिख रहे हैं,'' उसने कहा।
''वे जहाज़ हैं,'' मिस्टर बेटस् बोले।
रिबैका पिता के पीछे आ खड़ी हुई।
''क्या वे ब्रितानी जहाज़ हैं?'' उसने पूछा
''इतनी दूर से पहचाना नहीं जा सकता,''
पिता ने जवाब दिया।

झंडा "काश वे ब्रितानी न हों," एबिगेल ने कहा।
"वे बन्दरगाह की नावों को जला सकते हैं,
जैसा उन्होंने पहले किया था।"
"फिक्र न करो नैबी," मिस्टर बेटस् बोले।
"जहाज़ों को सेडर पॉइन्ट पर लंगर डालना होगा,
तब हम उन्हें साफ़ देख सकेंगे।
अगर वे ब्रितानी हों, तो हम
किसीको मदद मांगने के लिए भेजेंगे।"
रिबैका, एबिगेल और मिस्टर बेटस्
जहाज़ों को देखते रहे।
उन्होंने युनियन जैक देखा,
जो ग्रेट ब्रिटेन का झंडा था।
वह जहाज़ों के मस्तूलों
के ऊपर लहरा रहा था।
जहाज़ सेडर पॉइन्ट की ओर बढ़े।

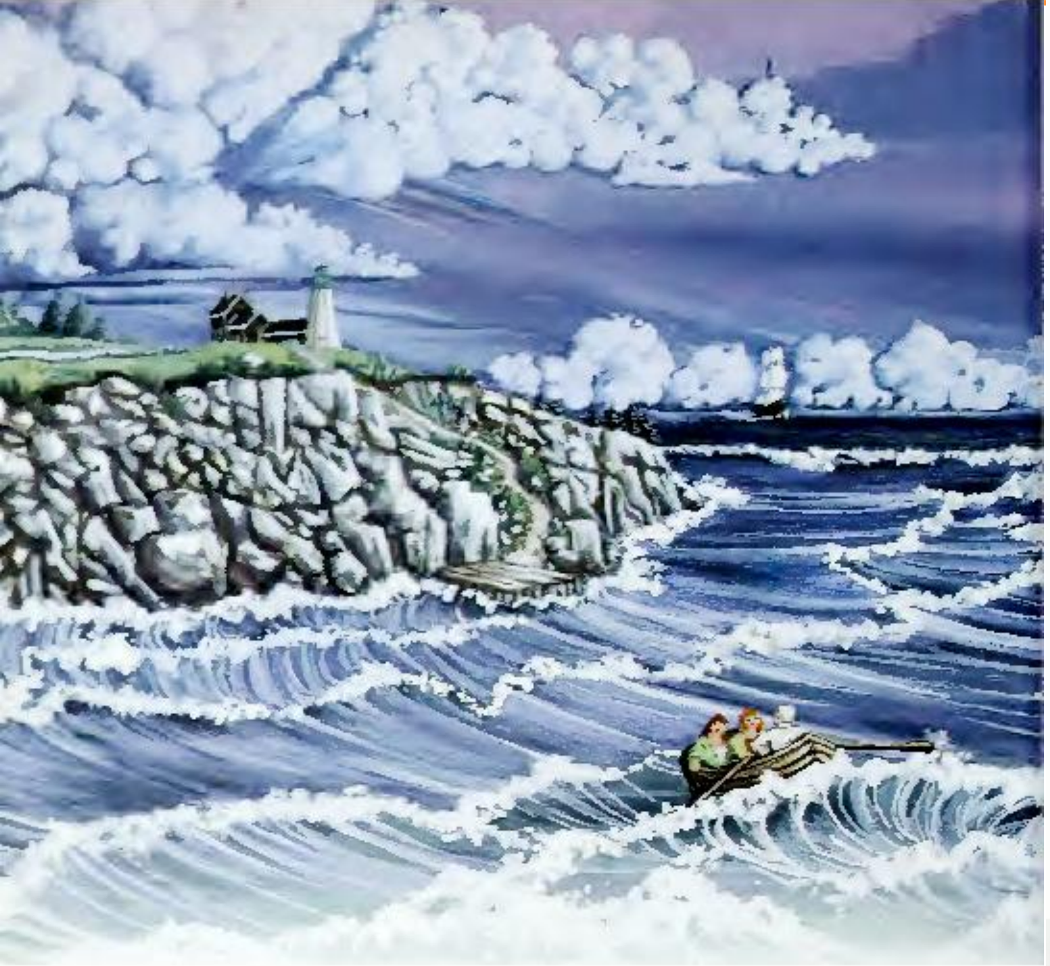

"ब्रितानी जल्दी ही यहाँ आ पहुँचेंगे,"
उन्होंने चीख कर बताया।
कस्बे के लोग दौड़े आए।
"हमें क्या करना चाहिए?" एक ने पूछा।
"मैं कहती हूँ, हमें लड़ना चाहिए," एक युवती चिल्लाई।
"हम सैनिक नहीं हैं," मिस्टर बेटस् ने कहा।
"उनके पास बन्दूकें और तोपें हैं,
हमारे पास कुछ नहीं है।"

मिस्टर बेटस् रिबैका और एबिगेल
प्रकाशस्तंभ की सीढ़ियों से नीचे दौड़े।
वे नीचे बंधी नावों में से एक में बैठे
और तेज़ी से चप्पू चला
कस्बे के घाट की ओर बढ़े।

कस्बे के कुछ लोग अपने घरों की ओर भागे।
उन्होंने अपने बर्तन-भांडे और खाने
का समान चादरों और मेज़पोशों में बांधा,
तब उन्हें छिपा दिया ताकि सैनिक
उन्हें लूट न लें।
बाकि लोग ब्रितानी जहाज़ों को ताकते
यह बहस करते रहे कि करना क्या चाहिए।
एक व्यक्ति घोड़े पर सवार हुआ
ताकि वह मैसाच्युसैटस् के होम गार्डस् (गृह रक्षकों)
को खबर दे सके।

बितानी जहाज़ों ने
सेडर पॉइन्ट पर लंगर डाला।
चप्पुओं से चलाई जाने वाली
कई नावें पानी में उतारी गईं।
जल्द ही चटक लाल वर्दी पहने
ब्रितानी सैनिक कस्बे के घाट पर खड़े थे।
वे अपनी बन्दूकों से लैस थे।

“केंकड़ापीठ!” एबिगेल फुसफुसाई।
सैनिक कस्बे के बाशिन्दों के पास आए।
रिबैका अपने पिता के और पास सरक आई।
एबिगेल ने घबरा कर अपने पिता का हाथ थामा।
“हमें माँस, सब्ज़ियाँ और
ताज़ा पानी चाहिए,” उनके अफ़सर ने कहा।
“नहीं,” पादरी थॉमस ने कहा,
“हम अपने दुश्मनों को रसद नहीं देंगे।”
“तो इनकी नावों को ज़ब्त कर लो,”
अफ़सर ने सैनिकों को हुक्म दिया।
सैनिक मछुआरों की उन नावों में कूदे
जो घाट पर बंधी थीं।
लोगों ने उन सैनिकों को
एक नाव जलाते देखा।
क्या अगला हमला उनके घरों पर होगा?

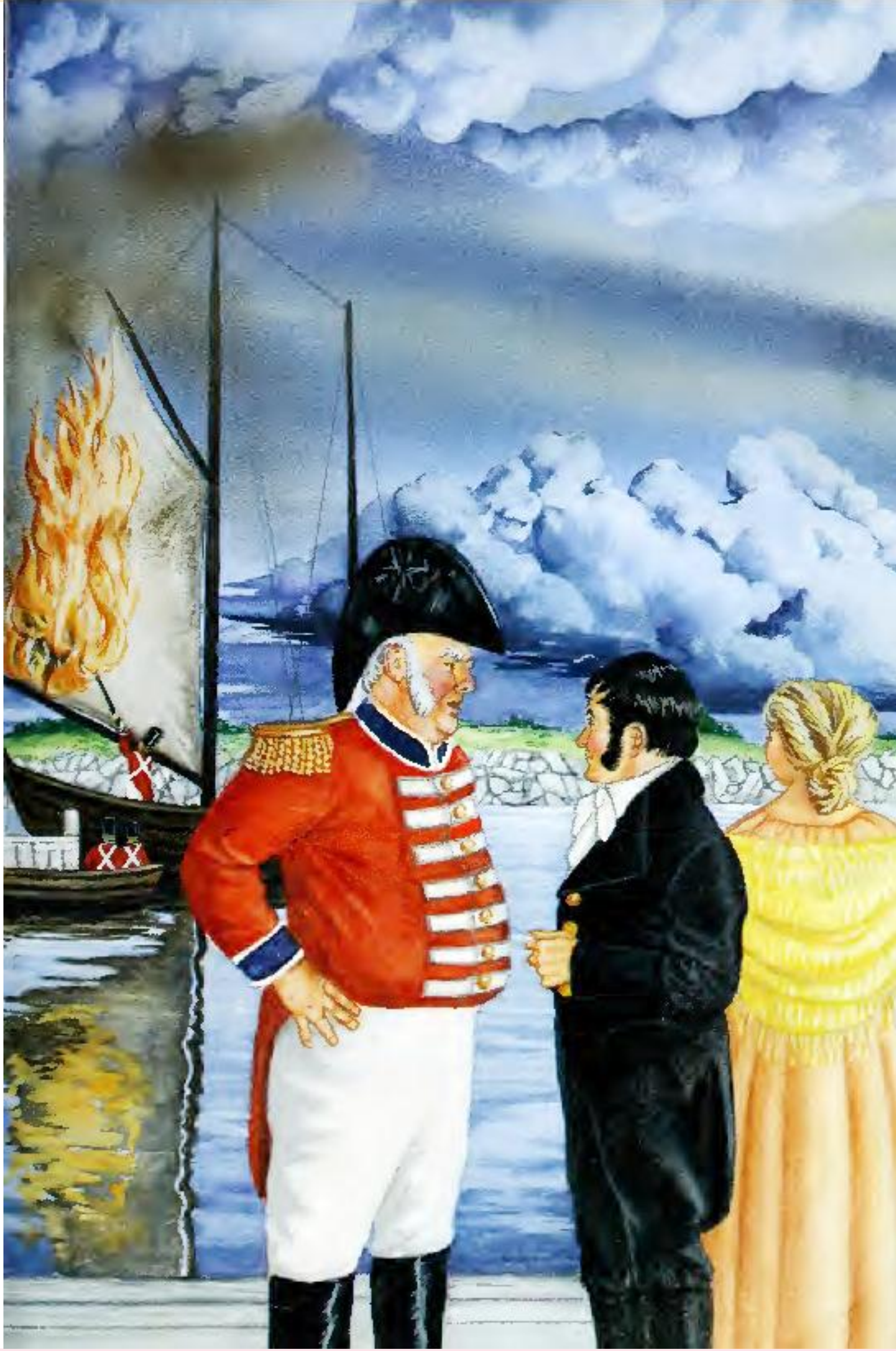

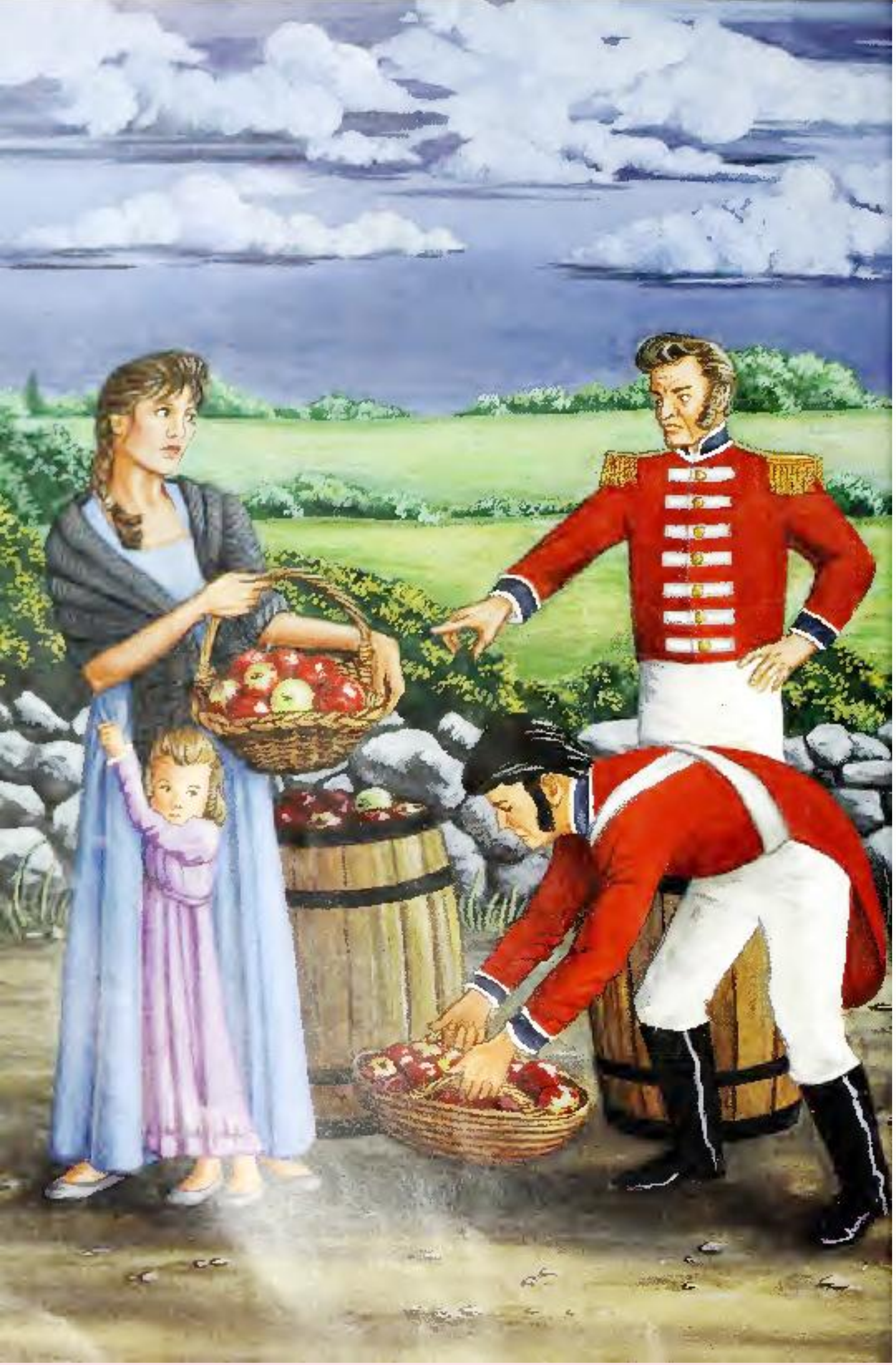

ब्रितानी सैनिकों ने चार नावें ज़ब्त कर लीं।
उन्होंने सिच्युएट के बाशिन्दों से जबरन
खाने की सामग्री और ताज़ा पानी लिया।
इसके बाद ही लाल वर्दीधारी सैनिक
अपने जहाज़ों को लौटे।
मिस्टर बेटस्, रिबैका
और एबिगेल अपनी नाव में बैठ
प्रकाशस्तंभ में अपने घर लौटे।
ब्रितानी जहाज़ उस पूरे सप्ताह
सेडर पॉइन्ट से कस्बे तक आते-जाते रहे।
तब अगले सप्ताह फिर आए।
उसके अगले सप्ताह भी।
वे कस्बे में जबरन रसद लेने आते रहे।
"आख़िर वे जाएंगे कब?"
कस्बे के बाशिन्दे सोचते।

एक दोपहर मिस्टर बेटस् अपने कुछ बच्चों - रिबैका, एबिगेल, और जुड़वाँ बेटों के साथ कस्बे गए।
मिस्टर बेटस् आगे का समाचार जानना चाहते थे।
पर कोई नया समाचार नहीं था।
ब्रितानी सैनिक अब भी घाट पर जमे थे।
और कोई कुछ कह नहीं रहा था।
रिबैका और एबिगेल ने तय किया
कि वे पैदल घर लौटेंगी।
हो सकता है कि उनके पड़ौसियों
को कुछ जानकारी हो।

वे सड़क पर बढ़ रहीं थीं
कि उन्हें बाँसुरी और ढ़ोल
की हल्की आवाज़ें सुनाई दीं।
"वे 'यैंकी डूडल' की धुन
बजा रहे हैं," रिबैका ने कहा।
इसका मतलब है होम गार्डस्
ब्रितानी सैनिकों को भगाने आ रहे हैं,"
एबिगेल ले कहा।
"चलो अपन पापा को बताते हैं।"

दोनों बहनें वापस कस्बे के और भागीं।
“हमारे सैनिक आ रहे हैं!
हमारे सैनिक आ रहे हैं!”
रिबैका और एबिगेल दूर से ही चिल्लाईं।
कस्बे वालों ने उनकी चीख-पुकार सुनी।
वे अपने घरों और दुकानों से निकले।
मछुआरों ने अपने जालों की मरम्मत बन्द कर दी।
बच्चों ने खेलना बन्द कर दिया।
ब्रितानी अफ़सर ने पादरी थॉमस से
बात करना बन्द कर दिया।
अफ़सर नाराज़ दिखा।
वह दोनों बहनों के पास आया।
“तुम झूठ बोल रही हो,” उसने कहा।
“ना! कतई नहीं,” रिबैका ने जवाब में कहा।
“आप खुद ही सुन लो!”

सब ध्यान से सुनने लगे।
उन्होंने पेड़ों के पीछे से आती
"यैंकी डूडल" की धुन सुनी।
ब्रितानी अफ़सर भी अमरीकी सैनिकों
की कदमताल की धुन पहचानता था।
"तो तुम्हारे सैनिक आ रहें हैं?" वह बोला।
"हम यहाँ आराम करने आते हैं, लड़ने नहीं।
हम तब वापस लौटेंगे, जब वे जा चुके होंगे।"
वे अपनी नावों में सवार हो
जहाज़ों तक लौटे, और तब रवाना हो गए।

मैसाच्युसैटस् होम गार्डस्
जब कस्बे में घुसे, कस्बे
के लोगों ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया।
पर ये अमरीकी सैनिक
लम्बे समय तक रुक नहीं सकते थे।
मैसाच्युसैटस् का तट
मीलों-मील तक पसरा था।
उन्हें हरेक मील की रखवाली करनी थी।

सप्ताह भर भी नहीं हुआ था कि
उनके कूच करने का समय आ गया।
उनमें से केवल एक व्यक्ति
निगरानी के वास्ते प्रकाशस्तंभ में रुका।
उसे ब्रितानी जहाज़ देखते ही
सैनिकों को बुलाने की ज़िम्मेदारी दी गई।

रिबैका और एबिगेल
रुके हुए होमगार्ड से मिलने गए।
उसका नाम लीवाई था।
''क्या आप बाँसुरी बजाते हो,'' रिबेका ने
उसकी जेब में रखी बाँसुरी की ओर इशारा कर पूछा।
''हाँ,''लीवाई बोला। ''मैं ढ़ोल भी बजाता हूँ
पर एक साथ दोनों नहीं,''
उसने मुस्कुराते हुए कहा।
''बाँसुरी वादक और ढोलची,
अफ़सरों और सैनिकों के साथ लड़ाई में जाते हैं,''
लीवाई ने रिबैका को बाँसुरी पकड़ाई।
''लो इसे बजाने की कोशिश करो।
इसे यों तिरछी कर पकड़ो
और उसके छेद में फूंक मारो।''
रिबैका ने बाँसुरी अपने होंठों से लगाई,
उसी तरह जैसे लीवाई ने कर दिखाया था।

उसने अपने होंठ सिकोड़े और फूंक मारी।
एक तीखी आवाज़ निकली।
एबिगेल हंस पड़ी।
आवाज़ ''यैंकी डूडल'' जैसी कतई नहीं थी।

तब लीवाई ने ढोल और उसे
बजाने की दो छड़ियाँ निकालीं,
और एबिगेल को पकड़ाईं।
''छड़ियों को इस तरह पकड़ो,'' लीवाई ने कहा।
''एक को बाएं हाथ में ऐसे कि हथेली ऊपर रहे,
और दूसरी को दाहिने में हथेली नीचे रखते हुए।
एबिगेल ने छढ़ियों को सही तरह पकड़ा
और ढ़ोल को पीटने लगी।
''अरे धीरे,'' लीवाई मुस्कुराते हुए बोला।
''सैनिक इतनी तेज़ी से कूच नहीं कर सकते।''

कई सप्ताह गुज़रे
ब्रितानी सैनिक नहीं लौटे।
रिबैका और एबिगेल बाँसुरी और ढ़ोल
बजाने का लगातार अभ्यास करती रहीं।
जल्द ही वे ''यैंकी डूडल'' की धुन को
लगभग लीवाई की ही तरह बढ़िया से बजाने लगीं।

एक सुबह रिबैका और एबिगेल
अपनी माँ के साथ मक्के की डबल-रोटी बना रही थीं।
''काश अपने पास चीनी होती,'' एबिगेल ने कहा।
''मैं उबले कद्दू से चीज़ों का स्वाद
बेहतर बनाने से तंग आ चुकी हूँ।''
''हो सकता है तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए, नैबी,''
मिसेज़ बेटस् ने कहा।
''कल रात दो जहाज़ रसद ले
बन्दरगाह में आ चुके हैं।
तुम्हारे पिता बाकि बच्चों और लीवाई को लेकर
यह देखने गए हैं कि क्या बिक रहा है।
अगर चीनी और आटा होगा
वे थोड़ा-बहुत लेते आएंगे।''
दोनों बहनें खुश हो गईं।
मिसेज़ बेटस् ने मुस्कुराते हुए कहा
''मैं मक्की की डबल-रोटी बना लेती हूँ।

एबिगेल और रिबैका सीढ़ियाँ चढ़
प्रकाशस्तंभ के ऊपरी हिस्से में गईं।
पर वे जल्द ही दौड़ती हुई लौटीं।

''मम्मा ब्रितानी लौट आए हैं,'' एबिगेल चीखी।
''हमने अभी-अभी एक बितानी जहाज़ को
सेडर पॉइन्ट में लंगर डालते देखा है!'' रिबैका ने जोड़ा।
''तुम और एबिगेल यहीं रहो,''
मिसेज़ बेटस् ने कहा। ''नज़र रखना,
मै लीवाई को ढूंढ, उसे होमगार्डों
को बुलाने भेजती हूँ।''
वे दरवाज़े से बाहर दौड़ीं।

''अगर वे सारी रसद जला दें तो क्या होगा बैकी?''
एबिगेल ने पूछा।
रिबैका प्रकाशस्तंभ की सीढ़ियों की ओर दौड़ी।
लीवाई की बाँसुरी और ढ़ोल
को देख वह ठिठक गई।
''हम ब्रितानियों को अपना कस्बा नहीं जलाने देंगे,''
रिबैका ने कहा। ''यह पकड़ो,''
उसने एबिगेल को ढ़ोल पकड़ाते कहा।
''तुम ढ़ोल लो और
मैं बाँसुरी लेती हूँ।''
''हम जा कहाँ रहे हैं?'' एबिगेल ने पूछा।
''ब्रितानी सैनिकों से लड़ने,'' रिबैका बोली।
''चलो चलें!''
''एक बाँसुरी और एक ढोल से?''
एबिगेल ने सवाल किया।
वह ढोल थामे रही पर हिली नहीं।
''वे हमें चोट पहुँचा सकते हैं,'' उसने आपत्ति की।

''वे हमें देखेंगे ही नहीं,'' रिबैका ने कहा।
''अगर वे देखेंगे ही नहीं तो चोट भी नहीं पहुँचा सकेंगे।''
रिबैका ने एबिगेल का हाथ थामा और दौड़ पड़ी।

दोनों बहनें सेडर पॉइन्ट के किनारे तक दौड़ीं।
वे घने देवदार (सेडर) के पेड़ों के पीछे जा छिपीं।
जब एबिगेल ने लाल कोटधारी ब्रितानी सैनिकों से भरी
दो नावों को जहाज़ से उतारे जाते देखा
वह घबरा कर कराही।
''उनके पास बन्दूकें हैं,'' वह बोली।
''शश्शश्शश!'' रिबैका ने फुसफुसा कर उसे चुप कराया।

ब्रितानी सैनिक नावों को घाट की ओर खेने लगे।
''वे पास आते जा रहे हैं,'' एबिगेल ने धीमे से कहा।
''पर वे इतने पास नहीं हैं कि वे संगीत सुन सकें,''
रिबैका ने पलट कर धीमे से कहा।
एबिगेल ने ढोल की छड़ियों का मज़बूती से पकड़ा
ताकि उसके हाथ काँपे नहीं।

नावों में सवार सैनिक पास आते जा रहे थे।
एबिगेल को डर था कि वे उन्हें देख न लें।
"नैबी, अब," रिबैका फुसफुसाई।
"पहले-पहल धीमे बजाना है
और तब आवाज़ बढ़ाते जाना है।
हमें उन्हें यह सोचने देना है कि
हमारे सैनिक बढ़ते चले आ रहे हैं।"
रिबैका ने अपने सूखे होंठ चाटे
और एक गहरी साँस खींची।
एबिगेल ने छड़ियाँ संभालीं, उसकी
बाँई हथेली ऊपर और दाहिनी नीचे थी।
रिबैका ने सिर हिला इशारा किया।
दोनों बहने अपने-अपने साज़ बजाने लगीं।

शुरुआत में "यैंकी डूडल" की धुन
कुछ कंपकंपाती और कमज़ोर थी।
पर वे धुन को बार-बार बजा चुकी थीं।
हर बार वे उसे पहले से बेहतर
बजा चुकी थीं।

संगीत पानी पर तैरता
ब्रितानी सैनिकों तक पहुँचा।
उन्होंने अचानक चप्पू चलाना बन्द किया।
एक सैनिक ने बन्दूक उठाई
और देवदार के पेड़ों की ओर देखा।

दोनों बहनें और नीचे झुकीं
क्या वह बन्दूक दागने वाला है?
उन्होंने सोचा।
एबिगेल के हाथ थक चुके थे।
रिबैका का दम फूलने लगा था।
पर वे और ज़ोर से बजाने लगीं।

तब पहली नाव पर बैठा अफ़सर खड़ा हुआ।
"वापस मुड़ो!" वह चीखा।
"अमरीकी सैनिक आ रहे हैं!"
ब्रितानी सैनिकों ने धीमे-धीमे
नावें जहाज़ की ओर मोड़ीं।
"हमने कर दिखाया, बैकी! हमने सचमें कर दिखाया!"
एबिगेल ने फुसफुसा कर कहा।
रिबैका का दम इस कदर फूला हुआ था
कि वह कुछ बोल ही नहीं सकी।
उसके होंठ बाँसुरी बजाने से
इतने सुन्न थे कि वह मुस्कुरा तक नहीं सकी।
पर अब भी मामला ख़त्म नहीं हुआ था।
अफ़सर अपना फैसला बदल भी सकता था।

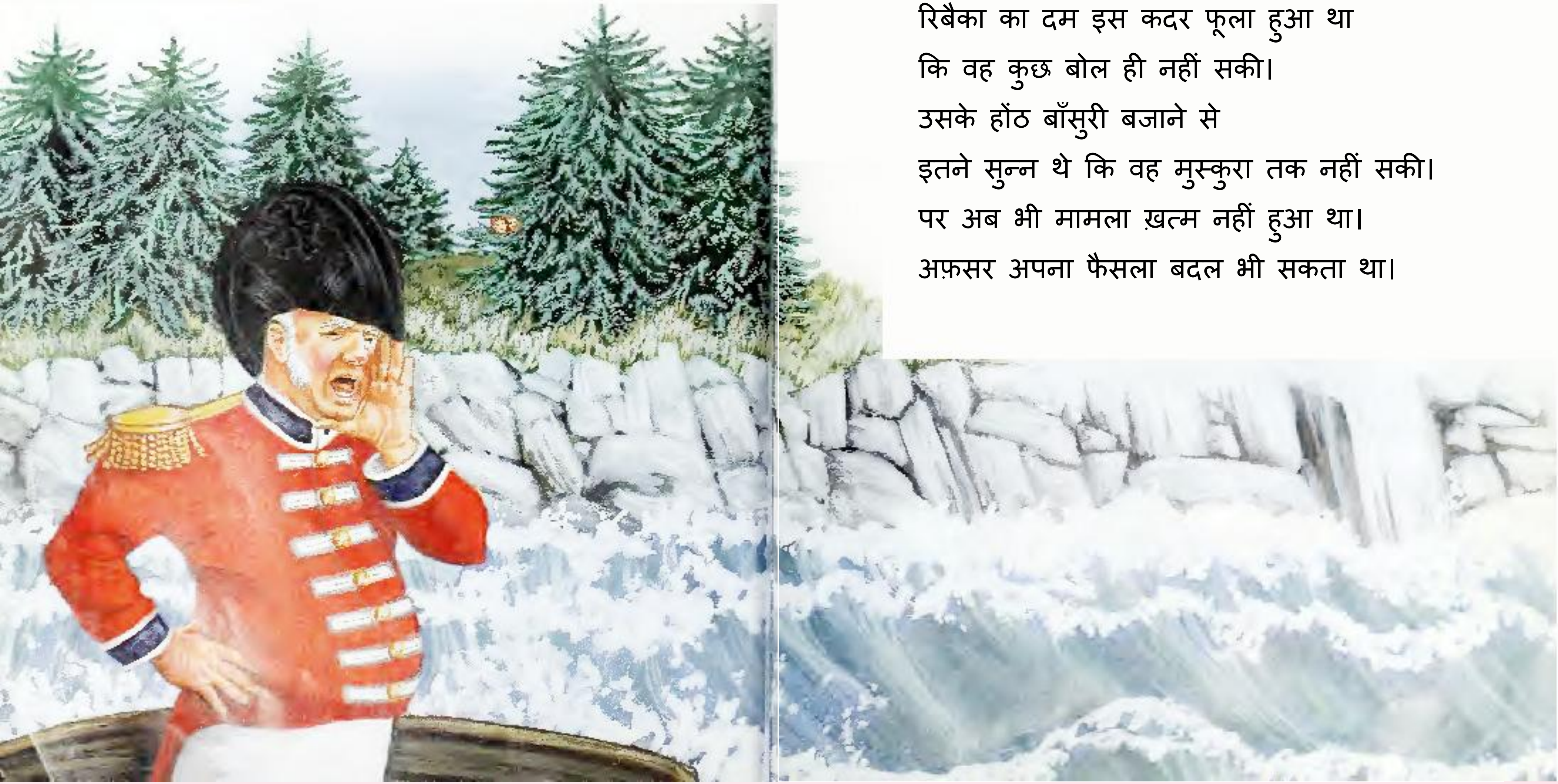

बहनें बजाती रहीं।
आख़िरकार सभी लाल कोटधारी सैनिक
जहाज़ पर लौट गए।
रिबैका और एबिगेल ने जहाज़ को
चले जाते देखा, तब तक,
जब तक वह समुद्र में एक बिन्दु-सा न दिखने लगा।

बहनें प्रकाशस्तंभ को लौटीं।
''बैकी! नैबी!'' मिसेज़ बेटस् ने आवाज़ दी।
''तुम दोनों आख़िर थीं कहाँ?'' उन्होंने पूछा
''हमने ब्रितानी सैनिकों को डरा कर भगा दिया!''
रिबैका ने कहा।
''क्या?'' सबने एक साथ पूछा।

बहनों ने सबको बताया कि उन्होंने
सैनिकों को कैसे छकाया था।
''तुमने तो हमें भी छका दिया,'' मिस्टर बेटस् बोले।
''हमने भी संगीत सुना और सोचा
कि होम गार्डस् आ रहे हैं।''
दोनों बहनें गर्व से मुस्कुराईं।

"लीवाई कहाँ है?" रिबेका ने जानना चाहा।

"मुझे उसकी बाँसुरी लौटानी है।"

"और उसका ढोल भी," एबिगेल ने जोड़ा।

"लीवाई घोड़े पर सवार हो होम गार्डस् को बुलाने गया है," मिसेज़ बेटस् ने कहा।

"पर हमें अब उनकी ज़रूरत ही नहीं। हमारे पास तो तुम दोनों हो! दो जनों की अमरीकी सेना!"

उपसंहार

"यैंकी डूडल" के लिए कहा गया था कि वह 'पुरानी हवा है - जिसके बारे में किसीको पता नहीं कि वह आई कहाँ से। यह सच है कि पक्के तौर पर यह कोई नहीं जानता कि इस धुन को पहले-पहल कब और कहाँ बजाया गया था। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह युरोप की एक मध्ययुगीन सैन्य धुन या फिर किसी लोकनृत्य की धुन है। कुछ दूसरे मानते हैं कि यह अंग्रज़ी की बाल-कविता "लकी लॉकेट लॉस्ट हर पॉकेट" का रूपान्तर है।

पर इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि "यैंकी डूडल" अमरीकी क्रान्ति युद्ध के दौरान बेहद लोकप्रिय हुआ था। युद्ध की शुरुआत में ब्रितानी सैनिक इसे अमरीकी सैनिकों का मखौल उड़ाने के लिए बजाया करते थे। इसलिए क्योंकि अमरीकी सैनिक अप्रशिक्षित थे। वे कतारबद्ध हो सीधे बढ़ ही नहीं पाते थे। उनकी कोई वर्दी नहीं थी, और उनमें सीधी कतारों में चलने का अनुशासन नहीं था। "यैंकी" शब्द का मतलब है उज्जड आदमी; "डूडल" का अर्थ है एक मूरख इन्सान जो आलसी भी हो (डू-लिटिल); और "डैंडी" (व मैकरॉनी का भी) मतलब है वह इन्सान जो तड़क-भड़क वाले रिबनों, पंखों आदि से सजे कपड़े पहनता हो।

अमरीकी सैनिकों को यह जीवन्त व ताल में कूच करने के लिए आसान गीत पसन्द था। जल्द ही वे युद्धक्षेत्र में जाते समय इसका इस्तमाल करने लगे। क्रान्ति युद्ध की 1783 में समाप्ति तक ब्रितानी लोग इससे इतने आज़िज़ आ चुके थे कि वे इसे फिर कभी सुनना ही नहीं चाहते थे। पर 1812 के युद्ध के दौरान उन्हें इसे कई-कई बार सुनना पड़ा।

इस युद्ध के बाद अमरीका और इंग्लैण्ड के बीच शान्ति और सम्मान का दौर आरंभ हुआ। 1819 में वॉशिंगटन डी.सी. में ब्रितानी अधिकारी के सम्मान में एक बॉल का आयोजन किया गया। वाद्यवृन्द ने इंग्लैण्ड के सम्मान में ''गॉड सेव द किंग'' बजाया। इसके खत्म होने पर ब्रितानी अधिकारी ने कहा कि अब अमरीका के सम्मान में भी कुछ बजाया जाए। संयुक्त राज्य अमरीका का अब तक कोई राष्ट्रगीत था ही नहीं। सो ब्रितानी अधिकारी ने वाद्यवृन्द से का कि वे ''यैंकी डूडल'' बजाएं।

सालों से ''यैंकी डूडल'' अमरीका का पसन्दीदा गीत रहा है। यह अमरीका का पहला देशभक्ति गीत है, और क्रान्ति युद्ध का वह अकेला गीत भी है जिसे वहाँ अब तक गाया जाता है।